सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी ब

टेस्ट पेपर-03

पाठ-16 पतझर में टूटी पत्तियां –रवीन्द्र केलेकर

निर्देश -

1. **सभी प्रश्न अनिवार्य है।**
2. **प्रश्न 1 से 3 एक अंक के है।**
3. **प्रश्न 4 से 8 दो अंक के है।**
4. **प्रश्न 9 से 10 पांच अंक के है।**

---

1. पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए |
2. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?
3. लेखक किस देश की यात्रा पर गए हुए थे?
4. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या हैं?
5. चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?
6. चाजीन ने कौन सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढ़ंग से पूरी की?
7. गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी; उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।
8. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?
9. आपके साथ ऐसा कभी हुआ जब शुद्ध आदर्श में व्यावहारिकता का पुट देने से लाभ हुआ।अपना अनुभव लिखिए|
10. समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी ब

टेस्ट पेपर-03

पाठ-16 पतझर में टूटी पत्तियां –रवीन्द्र केलेकर

(आदर्श उत्तर)

1. पाठ का नाम-पतझर में टूटी पत्तियाँ |लेखक का नाम-रवीन्द्र केलेकर |
2. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है वहाँ गजब की शांति होती है। माहौल इतना शांत होता है कि पानी के खुद्बुदाने की आवाज भी सुनाई देती है।
3. लेखक जापान की यात्रा पर गए हुए थे |
4. शुद्ध आदर्श वैसा आचार-विचार है जिसने इसका पालन करने वालों का उत्थान तो किया ही है साथ में अन्य लोगों का भी उत्थान किया है।
5. चाय पीने के बाद लेखक को अपार शांति महसूस हुई। उसे लगा कि उसके दिमाग की रफ्तार कम हो चुकी थी। उसके मन में और आस पास सब कुछ शून्य सा हो गया था।
6. चाजीन ने बड़े अदब से मेहमानों का स्वागत किया और उन्हें बैठने की जगह दिखाई। फिर उसने अंगीठी जलाई और उस पर चायदानी रखी। इसके बाद उसने बरतनों को चमकाया। यह सारी क्रियाएँ उसने गरिमापूर्ण ढ़ंग से पूरी की।
7. गांधीजी ने अफ्रीका में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लोगों को इकट्ठा किया था। जब वे भारत आए थे तब तक स्वाधीनता संग्राम की लहर पूरे भारत में नहीं फैल पाई थी। गांधीजी के अथक प्रयासों के कारण पूरे भारत की जनता उनके साथ हो गई थी। असहयोग आंदोलन और नमक आंदोलन की अपार सफलता से पता चलता है कि उनमें नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी।
8. लेखक के मित्र ने भागदौड़ भरी जिंदगी को मानसिक रोग का कारण बताया। यह बात सही है कि लोग आजकल चल नहीं रहे हैं, बल्कि भाग रहे हैं। आप किसी भी शहर की सड़कों पर सुबह 9 बजे नजर डालिए तो पता लगेगा कि हर कोई कहीं न कहीं भाग रहा है। लोग अत्यधिक तनाव में होने की वजह से बात बात पर झल्लाने लगते हैं। रोज-रोज की उत्तरजीविता के दवाब के कारण मानसिक रोग का खतरा बढ़ गया है।
9. (छात्र अपना अनुभव लिखेंगे) मुझे हमेशा से पसंद है कि जब मैं नई क्लास में जाऊँ तो मेरे लिए नई किताबें खरीदी जाएँ। लेकिन कक्षा 9 में प्रवेश के समय मुझे एक मित्र की पुरानी किताबें आधे दाम पर मिल गईं। मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा, लेकिन बचत करने के खयाल से मैंने उसकी सारी किताबें खरीद लीं। इससे मुझे फायदा हुआ।
10. आदर्शवादी लोग कभी भी अपने बारे में नहीं सोचते हैं। वे हमेशा दूसरों को ऊपर उठाने की कोशिश करते हैं। इस प्रक्रिया में उनका कद भी ऊँचा हो जाता है और पूरे समाज को दीर्घकालीन लाभ होता है। व्यावहारिक लोग तो केवल अपने मतलब की बात करते हैं, जिससे समाज का कोई भला नहीं होता। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।